उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 702/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 07–03–2024

दिनांक : 07 मार्च, 2024
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की इक्कीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की 21वीं बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 07 मार्च, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक ; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानुपर के पादप रोग वैज्ञानिक एवं गेहूँ प्रजनक; गन्ना विभाग; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; वन विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिकों; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक एवं कीट वैज्ञानिक सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय मेरठ के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

आगामी सप्ताह (07 मार्च से 14 मार्च, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (07 मार्च से 14 मार्च, 2024) के दौरान प्रदेश के ज्यादातर कृषि जलवायु अंचलों में मौसम सामान्यतया शुष्क बना रहने परंतु दिनांक 13 मार्च, 2024 को भावर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है।

प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के मध्य भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से कम एवं प्रदेश के मध्य भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 24–26 डिग्री सेल्सियस, भांवर तराई क्षेत्र के मध्य भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 26–28 डिग्री सेल्सियस, भांवर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग, दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 28–30 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 30–32 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। उक्त तापमान श्रेणियां औसत साप्ताहिक तापमान को प्रदर्शित करती है, परंतु किसी विशिष्ट दिन उक्त तापमान इस श्रेणी से अधिक या कम हो सकता है।

प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के मध्य भाग एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम तथा पूर्वी मैदानी एवं उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 10–12 डिग्री सेल्सियस; बुंदेलखंड एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 14–16 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में 12–14 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग से प्राप्त जायद फसलों के आच्छादन आंकडों के अनुसार दिनांक 7 मार्च, 2024 (अनंतिम) तक कुल लक्ष्य 9.45 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.98 लाख हेक्टेयर की बुआई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 20.98 प्रतिशत है। मक्का की बुआई लक्ष्य 2.10 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.49 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जो लक्ष्य का 23.53 प्रतिशत है। बाजरा की बुआई लक्ष्य 0.86 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.22 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जो लक्ष्य का 2.50 प्रतिशत है, मूंग की बुआई का लक्ष्य 0.74 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.040 लाख हेक्टेयर हुई जो लक्ष्य का 5.41 प्रतिशत है। उर्द की बुआई 0.66 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.07 लाख हेक्टेयर हो चुकी है जो लक्ष्य का 11.11 प्रतिशत है। इसी प्रकार अन्य फसलों में सूरजमुखी लक्ष्य के सापेक्ष 4.28 प्रतिशत की जा चुकी है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- प्रदेश में छिटपुट एवं मध्यम वर्षा होने से गेहूं की फसल में कारनालबंट रोग, गेरूई व कण्डुआ के प्रकोप की संभावना बढ़ गई है। पिछले वर्षों में जिन क्षेत्रों में यह रोग चिंहित हुये है वहां पर इस रोग के बीजाणुओं का प्रसार हवा एवं पानी के द्वारा होने की संभावना है। इस रोग के प्रबंधन हेतु फसल में बालियां निकलते समय तथा पुष्पावस्था पर प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. की 500 मिली. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से सुरक्षात्मक छिड़काव करने से फसल को बचाया जा सकता है।
- प्रदेश में तेज हवा के साथ वर्षा एवं कहीं कहीं पर ओलावृष्टि के कारण मुख्य रूप से राई/सरसों की फसल गिर गई है, जल भराव के कारण दानों की गुणवत्ता प्रभावित होने की संभावना है। ऐसी दशा में किसान भाई तत्काल तैयार फसल की कटाई कर लें एवं फसल को किसी छायादार स्थान पर रखकर अच्छे से सुखाने के उपरांत ही मड़ाई करना चाहिये।
- उर्द/मूंग/मूंगफली/सूरजमुखी आदि की बुवाई से पूर्व बीज को ट्राइकोडर्मा से शोधित करके बुवाई करें।
- बुवाई से पूर्व मृदा को भी ट्राइकोडर्मा से शोधन करें जिसके लिये 1 कि.ग्रा. ट्राइकोडर्मा फारमुलेशन 15 से 20 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर 07 दिन रखने के उपरांत (थोड़ी नमीयुक्त) मृदा में डालें।
- आम की फसल में पाऊडरी मिल्ड्यू (खर्रा/दहिया) रोग की संभावना के दृष्टिगत ट्राइडीमार्फ अथवा पेनकोनाजोल 1 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर सरक्षात्मक छिडकाव करें।

जायद फसलों की खेती

- उर्द की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत पीला चित्रवर्ण अवरोधी (मोजैक) प्रजातियों यथा आई.पी.यू.-13-1, पंत उर्द -10, आई.पी.यू.-11-2, वल्लभ उर्द-1, प्रताप उर्द-1, विश्वास, माश-479 तथा कोटा उर्द-4 आदि की बुआई करें।
- मूंग की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु अधिक उपज वाली व पीला मोजैक अवरोधी संस्तुत प्रजातियों यथा के.एम.-2195 (स्वाती) आई.पी.एम.205-7 (विराट), आई.पी.एम.410-3 (शिखा), कनिका, वर्षा, आजाद मूंग-1, आई.पी.एम. 312-20, आई.पी.एम.409-4 (हीरा), वसुधा, सूर्या तथा आजाद मूंग-1 की बुवाई करें।
- सूरजमुखी की संकुल किस्मों किस्मों सूर्या, पी.बी.एन.एस.-40 मॉर्डन, संकर किस्मों, के.वी.एस.एच.-1, एस. एच.-3322, एम.एस.एफ.एच.-17 तथा वी.एस.एफ. की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- ग्रीष्मकालीन मूंगफली की संस्तुत किस्मों यथा आई.सी.जी.वी.-93468 (अवतार), जी.जे.जी., एच.एन.जी. -123, डी.एच.-86 बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- बाजरा की संस्तुत संकुल किस्मों आई.सी.एम.वी.-221, आई.सी.टी.पी.-8203, राज-171, पूसा कम्पोजिट-383 तथा संकर किस्मों यथा एम.पी.- 7792, एम.एच.-1553, 86 एम 84, 86 एम.-52, जी.एच. बी.-526, जी.एच.बी.-558 एवं पी.बी.-180 की बुआई करें।
- चेना (जेठी सावां) की संस्तुत प्रजातियों यथा एम.डी.यू.-1 व भावना प्रजाति की बुवाई 15 मार्च तक समाप्त करें।
- ज्वार की एकल कटाई हेतु संस्तुत प्रजातियों पी.सी.- 6,9,23, एच.सी.-171, 260, यू.पी. चरी-1-2, राज चरी-1,2 तथा बहु कटाई वाली प्रजातियों एस.एस.जी.-998, 855, को.-27, पंत चरी-5 की बुवाई मध्य मार्च से करें।

- लोबिया की उन्नत किस्मों कोहिनूर, श्वेता, बी.एल.–1, बुन्देल लोबिया–2,3, जी.एफ.सी.–1,2,3 एवं 4, यू.पी. सी.–618, 622 तथा ई.सी.–4246 की बुवाई करें।

गेहूँ की खेती

- सिंचित व असिंचित दोनों प्रकार के गेहूँ में अनावृत्त कंडुवा से रोगग्रस्त बाली दिखाई देने पर उसे लिफाफे में डालकर काट लें तथा जमीन में गाड़ दें। गेहूँ की बोई गई प्रजाति की शुद्धता बनाये रखने के लिये रोगिंग (अवांछित पौधों को निकाल दें) करें।
- गेरूई तथा पत्ती धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 700 ग्रा. अथवा जीरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. प्रति हे. की दर से लगभग 750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- अरहर में फलीबेधकों से 5 प्रतिशत प्रकोपित फली पाये जाने पर बी.टी. 5 प्रतिशत डब्लू.पी. 1.5 कि.ग्रा. या इण्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 400 मि.ली. या क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.50 ली. या फेनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मिली. 500–700 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- चना व मटर में फलीबेधक कीट व अर्धकुण्डलीकार कीट के नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी.टी) की कर्स्टकी प्रजाति 1.0 किग्रा अथवा एजाडिरैक्टिन 0.03 प्रतिशत अथवा डब्लू.एस.पी. 2.5–3.0 किग्रा. अथवा एन.पी.बी. ऑफ हेल्को वरपा आर्मीजेरा 2 प्रतिशत ए.एस. 250–300 मिली. को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।
- मटर में गेरूई रोग के लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु ट्राइडेमेफान 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- मटर में लगने वाले बुकनी/दहिया रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत डब्लू.जी. की 2 कि.ग्रा. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- यदि राई/सरसों व अलसी की फसल परिपक्व हो गई है तो कटाई कर सुरक्षित स्थान पर रख लें।

गन्ना की खेती

- सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के लिये गन्ने की संस्तुत प्रजातियों यथा को–0118, को–98014, को.शा.–13235, को. लख.–14201, को.शा.–17231, को.शा.–18231, को.शा.–16233 तथा पश्चिमी एवं मध्य क्षेत्र हेतु को. 15023 तथा जल प्लावित क्षेत्रों/विपरीत परिस्थितियों हेतु यू.पी.–9530 को.शा.–10239 तथा ऊसर मृदा में यू. पी.–14234 आदि प्रजातियों में से उपलब्धतानुसार चयन करें।
- नवरोपित शरदकालीन गन्ने में सिंचाई, खाद, उर्वरक का प्रयोग एवं गुड़ाई करना सुनिश्चित करें।
- गन्ने में खरपतवार नियंत्रण हेतु कस्सी, फावड़े या कल्टीवेटर से गुड़ाई करें श्रमिकों के अभाव में रासायनिक नियंत्रण हेतु मैट्रीब्युजीन (70 प्रतिशत) 500 ग्राम तथा 2–4 डी (58 प्रतिशत) 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 800 से 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से सकरी तथा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों का नियंत्रण होता है।
- नवरोपित शरदकालीन गन्ने में अंकुर बेधक से ग्रसित पौधे को जमीन की सतह से काटकर निकाल दें।
- पेड़ी व नवरोपित शरदकालीन गन्ने में यदि कण्डुआ (स्मट) रोग का संक्रमण हो तो ग्रसित पौधों को निकालकर नष्ट करें। रोगग्रसित गन्ने के चाबुक को पॉलीथीन की थैली से ढ़ककर ही कटाई करे, जिससे रोग के काले रंग का चूर्ण फैल नहीं पाये।
- पेड़ी में एक समान फुटाव हेतु मेड़ों को गिराने के पश्चात् तेज धारदार फावड़े से ठूठों की छटाई करने के पश्चात् देशी हल अथवा कल्टीवेटर से गन्ने की लाइनों की गुड़ाई करें।
- पेड़ी फसल में पर्याप्त पौधे की संख्या बनाये रखने हेतु गन्ने की दो थानों के मध्य 45 से.मी. से अधिक गैप होने पर पूर्व अंकुरित पैड़ों का प्रत्यारोपण कर देना चाहिये।

- पेड़ी फसल में नत्रजन एवं फास्फेटिक उर्वरकों की उपलब्धता बढ़ाने हेतु पर्याप्त नमी की दशा में 10 कि.ग्रा. एजोटोबैक्टर तथा 10 कि.ग्रा. पी.एस.बी. प्रति हेक्टेयर की दर से 2 से 3 कु. गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर गन्ने की जड़ों के पास डालकर गुड़ाई कर देनी चाहिये।
- बसंतकालीन गन्ने में मूंग, उर्द व लोबिया की उपयुक्त प्रजातियों की सहफसल ले सकते है। उन्हें बोने से पूर्व राइजोबियम कल्चर (1 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर) से उपचारित करें।

सब्जियों की खेती

- कृषक भिण्डी, करेला, लौकी, काशीफल, ककड़ी, खीरा, खरबूज एवं तरबूज की बुआई करें।
- बैंगन व मिर्च की बुवाई यदि अभी तक नहीं की है तो कर दें।
- परिपक्व आलू की खुदाई कर लें व छायादार स्थान पर सुरक्षित कर लें।
- बीज हेतु आलू के मध्यम आकार के कन्दों का भण्डारण मध्य मार्च तक अवश्य कर लें।
- आलू को भण्डारण के पूर्व कन्दों की छँटाई, ग्रेडिंग एवं बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करें।
- टमाटर एवं बैंगन में फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- प्याज तथा लहसुन में बैंगनी धब्बा तथा थिप्स के प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।

बागवानी

- जुलाई से सितम्बर के मध्य लगाये गये आम, अमरूद, नींबू आदि के नवीन बागों में जो पौधें किन्हीं कारणवश मर गये हो उनके स्थान पर नये पौधें लगायें। पपीता की रोपाई करें।
- आम में गुझिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत धूल का 200 ग्राम दवा प्रति पेड़ की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुझिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।
- आम के भुनगा कीट के रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस सी (0.3 मि.ली. प्रति लीटर) एवं प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. (01 मिली. प्रति लीटर) पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम में खर्रा रोग से बचाव हेतु घुलनशील गन्धक (2 ग्रा./ली. पानी) तथा इसके 10–15 दिन बाद डाइनोकैप अथवा ट्राईडोमार्फ (0.6 मिली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव करें।
- नींबू में कैंकर रोग का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार उपचार करें।

पशुपालन

- हरा चारा अधिक खिलाने से पशुओं में अफारा हो सकता है। अफरे से बचाव के लिये हरे चारे के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलायें।
- जायद/खरीफ में हरा चारा लेने के लिये ज्वार एवं मक्का की समय से बुवाई करें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें एवं नमक का चाटन भी करायें।
- पशु ब्याने के 1 से 2 घंटे के अंदर नवजात पशु को खीस अवश्य पिलायें।
- खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण कराया जा रहा है, यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक दवाई पशुचिकित्सा की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिये पूरा दूध निकालें और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणुनाशक घोल से साफ करें तथा बैठने न दें।

मत्स्य पालन

- तालाबों का जल स्तर 5 से 5.5 फुट तक बनाये रखा जाय।
- तालाब में संचित मत्स्य के पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों को मासिक रूप से 74 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर (सुपर फास्फेट 25 कि.ग्रा., यूरिया 45 कि.ग्रा., म्यूरेट ऑफ पोटाश 4 कि.ग्रा.) की दर से प्रयोग किया जाय।

- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाय।
- कामन कार्प मछलियों के प्रजनन के दृष्टिगत प्रजनकों (ब्रूडर) को पृथककरण उपरांत उनका विशेष पोषण सुनिश्चित किया जाय।
- मछलियों को निश्चित समय पर ही भोजन दिया जाय।

रेशम पालन

- अत्यधिक घना कीटपालन न करें।
- पत्तों में समुचित परिपक्वता की प्राप्ति हेतु दो शहतूत फसलों के मध्य 60–70 दिनों की वृद्धि सुनिश्चित करें।
- प्रभावी कीटनाशक व फसल की सफलता हेतु पृथक कीटपालन गृह का निर्माण करें।
- कीटपालन गृह एवं समस्त कीटपालन उपकरणों का विशुद्धीकरण दो प्रतिशत फार्मेलीन से करें। खुले कीटपालन गृह के विसंक्रमण हेतु पांच प्रतिशत विरंजक चूर्ण घोल अधिक प्रभावी होता है।
- आदर्श कीट पालन कक्ष के अन्दर स्वास्थ्यकर दशाओं का सख्ती से पालन करें।
- आदर्श तापक्रम 25 डिग्री सेंटीग्रेड एवं आर्द्रता 90 प्रतिशत अवस्थाओं में रेशम कीट बीज का उष्मायन करें।
- 6'X4' आकार की एक चंद्रिका में लगभग 1000 कीटों को प्रतिस्थापित करें।

वानिकी

- विलायती बबूल, अंवला के बीजों की बुआई रूट ट्रेनर/थैलियों में कर लें।
- अपनी पौधशाला के अंकुरण कक्ष में पौधों का प्रतिरोपण रूट ट्रेनर/पॉलीथीन थैलों में कर, छाया घर (शेड हाउस) में स्थानान्तरित कर लें।
- अक्टूबर से मार्च के प्रथम पक्ष तक प्रदेश की झीलों में रहने वाले प्रवासी पक्षी मार्च प्रथम सप्ताह में वापस जाने हेतु झुण्ड में तैयार रहते है। इस समय इन पक्षियों को शिकारियों से सर्वाधिक खतरा रहता है। इस अवधि में शिकारियों की जानकारी होने पर इसकी सूचना निकटतम वनकर्मी को दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 14 मार्च, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

ह0
(पियूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र.।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
45. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
46. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

7-3-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की इक्कीसवीं बैठक दिनांक 07 मार्च, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
3. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
4. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
5. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ
6. श्री ए. के. शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश
7. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
8. डा. समीर कुमार विश्वास, विभागाध्यक्ष, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
9. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
10. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
11. श्री राविन्स कुमार, अपर सांख्यिकी अधिकारी, मुख्य वन संरक्षक, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ। डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ
12. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)
13. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) (ऑनलाइन)
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
15. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज
16. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ
17. श्री सुमित कुमार गुप्ता, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ